- हॉब्स ने मनुष्य का **मनोवैज्ञानिक विश्लेषण** किया है|
- हॉब्स ने मानव स्वभाव के संबंध में **उग्र व्यक्तिवाद** व **मनोवैज्ञानिक अहमवाद** की अवधारणा दी है|
- हॉब्स मनुष्य को **असामाजिक, स्वार्थी, अहमवादी** प्राणी मानता है तथा मनुष्य की समस्त भावनाओं का केंद्र उसका '**अहम**' बताता है|
- मनुष्य के समस्त कार्यकलाप **स्वार्थ-भावना** से प्रेरित तथा संचालित होते है|
- मनुष्य **शक्ति की इच्छा** रखता है| **हॉब्स के** शब्दों में "शक्ति की इच्छा ऐसी अदम्य इच्छा है, जिसका अंत व्यक्ति की मृत्यु के साथ होता है|"
- **स्वार्थ भावना** की वजह से मनुष्य में 2 मूल प्रवृतियां पाई जाती हैं-
    1. आकर्षण
    2. विकर्षण

- आकर्षण को '**इच्छा की भूख**'(Appetite Of Disease) तथा विकर्षण को '**घृणा**' कहा जाता है| मनुष्य को जो वस्तुएं आकर्षित करती हैं, उन्हें अच्छी तथा जो वस्तुएं विकर्षित करती हैं उन्हें बुरी कहता है| अर्थात अच्छाई-बुराई वस्तु में न होकर मनुष्य की भावनाओं में होती है|
- मनुष्य **सामाजिक व लौकिक व्यवहार इस आधार पर करता है, कि उसका जीवन व संपत्ति सुरक्षित रहे**| मनुष्य अपने जीवन की सुरक्षा व इच्छा पूर्ति के लिए दूसरे मनुष्य से लड़ता-झगड़ता है| यहां तक उसको मार भी सकता है|

<u>मानव जीवन में संघर्ष के तीन कारण हॉब्स बताता है-</u>

1. **<u>प्रतिस्पर्धा-</u>** एक ही **लाभ प्राप्त** करने के लिए जब दो व्यक्तियों में प्रतिस्पर्धा होती है तो दोनों में संघर्ष होता है| हॉब्स के अनुसार प्रकृति ने सभी मनुष्यो को समान बनाया है, एक व्यक्ति शारीरिक रूप से शक्तिशाली होता है तो दूसरा उसको मानसिक बुद्धि के द्वारा छल-कपट या गुटबंधी से हरा सकता है अतः मनुष्यों के बीच प्रतिस्पर्धा विद्यमान रहती है|

2. **<u>भय/ अविश्वास</u>-** प्रतिस्पर्धा के कारण मनुष्य को हमेशा अपने जीवन की समाप्ति का भय रहता है तथा अपनी **सुरक्षा के लिए** संघर्षरत रहता है| **मिनोग** "हॉब्स एक ऐसे दार्शनिक थे, जिनका मृत्यु की ओर अदार्शनिक रुख था, **मृत्यु के प्रति भय** को हॉब्स ने मानव प्रकृति का मूल स्वभाव बताया है|"

3. **<u>वैभव या कीर्ति-</u>** अहंकार की वजह से मनुष्य अपना **वैभव/ यश** बढ़ाना चाहता है, इसके लिए संघर्षरत रहता है|

- इस संघर्षपूर्ण वातावरण में मनुष्य **'आत्मरक्षा के सिद्धांत'** पर कार्य करता है अर्थात प्रत्येक मनुष्य, दूसरे मनुष्य से सुरक्षा चाहता है| आत्म सुरक्षा के लिए व्यक्ति शक्ति को प्राप्त करना चाहता है, यह शक्ति शारीरिक, धन, पद, मान-सम्मान की शक्ति हो सकती है|
- उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि **थॉमस हॉब्स के अनुसार** मनुष्य **स्वार्थी, अहंकारी, डरपोक, झगड़ालू, एकाकी, पाशविक व असामाजिक प्राणी है,** जो आत्मरक्षा के आधार पर शक्ति प्राप्ति की लालसा रखता है|

- हॉब्स मनुष्य के ऐसे स्वभाव का कारण **गतियो** को मानता है| मानव शरीर में दो प्रकार की गतियां होती हैं-
    1. **<u>जैव गति</u>-** इसमें ह्रदय गति, पाचन क्रिया, श्वास क्रिया, मल मूत्र त्याग आदि शामिल है| यह **गति** महत्वपूर्ण नहीं है|
    2. **<u>मनोवैज्ञानिक गति</u>**- यह महत्वपूर्ण है, जो **मानव स्वभाव का कारण** है| यह **गति बाहरी उद्दीपको** से पैदा होती है| जैसे- **कीर्ति, वैभव/यश, शक्ति, सुरक्षा** आदि को प्राप्त करने के लिए मनुष्य आपस में झगड़ते हैं|

Note- हॉब्स ने सामान्यतः मानव स्वभाव के **नकारात्मक लक्षण** पर अधिक बल दिया है, लेकिन इसके साथ मनुष्य के सकारात्मक लक्षण की भी कल्पना की है| **हॉब्स के शब्दों में** "मनुष्य में कुछ एसी इच्छाएं होती हैं, जो युद्ध के बजाए शांति और मैत्री के लिए प्रेरित करती हैं|" मनुष्य में विवेक पाया जाता है विवेक की वजह से वह राज्य की स्थापना करता है|

- **ब्रमहिल व क्लेरेंडन** ने वर्णित इस मानव छवि की आलोचना करते हुए कहा कि हॉब्स व्यक्ति को पशुओं से भी गया- गुजरा अहम् वादी समझते हैं|

<u>प्राकृतिक अवस्था के विषय में हॉब्स के विचार-</u>

- राज्य संस्था के अस्तित्व से पूर्व की अवस्था को हॉब्स ने **प्राकृतिक अवस्था** या **पूर्व सामाजिक दशा** कहा है|
- Note-**मैकफरसन के अनुसार** हॉब्स ने प्राकृतिक अवस्था शब्द का प्रयोग नहीं किया है, बल्कि इससे मिलता जुलता शब्द **'मानव जाति की प्राकृतिक स्थिति'** का प्रयोग किया है|
- इस अवस्था में **मानव जीवन नारकीय, हिंसा प्रधान, असहनीय**

जाति की प्राकृतिक स्थिति' का प्रयोग किया है|

- इस अवस्था में **मानव जीवन नारकीय, हिंसा प्रधान, असहनीय** था|
- इस अवस्था में **सार्वजनिक शक्ति या सत्ता का अभाव था,** जो उनको नियंत्रित व भयभीत कर सके|
- यह ऐसे **युद्ध की अवस्था** थी, जो प्रत्येक मनुष्य का प्रत्येक मनुष्य के साथ युद्ध था|
- इस अवस्था में **उद्योग, संस्कृति, नो-चालन, भवन निर्माण, ज्ञान, यातायात के साधनों का अभाव** था तथा **मनुष्य का जीवन एकाकी, दीन, अपवित्र, पाशविक, क्षणिक** था|
- यह **अराजक अवस्था** थी, जिसमें जिसकी लाठी उसकी भैंस का सिद्धांत प्रभावशील था|
- इस अवस्था में **नैतिकता का सर्वथा अभाव** था, उचित- अनुचित, न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य का ज्ञान नहीं था|
- **नियम- कानूनों के अभाव** में शक्ति, धोखा, बल प्रयोग, प्रतिज्ञा भंग का बोलबाला था|
- इस अवस्था में **मनुष्य को हिंसात्मक मृत्यु का भय सदैव** रहता था|
- इस अवस्था में **व्यक्तिक संपत्ति व नैतिकता का अभाव** था|
- **हॉब्स** "हो सकता है ऐसी स्थिति सारे विश्व में न हो, लेकिन अमेरिका में जरूर है, जहां बर्बर लोग बड़े क्रूर तरीके से रहते हैं|" अर्थात प्राकृतिक अवस्था एक **काल्पनिक** स्थिति है|

- **Note-** प्राकृतिक अवस्था समझौते से पूर्व की अवस्था है| प्राकृतिक अवस्था **समाज पूर्व व राज्य पूर्व** की अवस्था है|
- **जॉन रॉल्स** "थॉमस हॉब्स की प्राकृतिक अवस्था में जो संघर्ष है, वह **'कैदी की दुविधा'** (Prisoner's Dilemma) के समान है|"

प्राकृतिक अधिकार संबंधी हॉब्स के विचार-

- हॉब्स ने अपने ग्रंथ **लेवियाथन के 14वे अध्याय** में इसका प्रतिपादन किया है|
- प्राकृतिक अवस्था में प्राप्त अधिकार को हॉब्स ने प्राकृतिक अधिकार कहा है|
- प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य को एक प्राकृतिक अधिकार प्राप्त था वह था- **जीवन रक्षा या आत्मरक्षा की स्वतंत्रता|**
- मनुष्य को अपने जीवन की रक्षा के लिए किसी व्यक्ति को मारने व लूटने की स्वतंत्रता थी|